



सेर को सवा सेर (कहानी)

4

एक समय की बात है। चंदनपुर में कालू नाम का एक ठग रहा करता था। वह राहगीरों को खूब ठगा करता था। गाँव वाले उसकी हरकतों से परेशान थे, लेकिन ऐसी कोई तरकीब नहीं निकाल पा रहे थे कि कालू को सबक सिखाया जा सके।

एक दिन कालू खेतों की ओर जाती पगडंडी पर खड़ा था कि उसे दूसरी ओर से आता एक नौजवान नज़र आया। उसके एक हाथ में घोड़े की लगाम थी और दूसरे हाथ में बकरी की रस्सी। अजनबी को पास आते देख कालू मुस्कराते हुए बोला, “राम-राम भैया! लगता है बड़ी दूर से आ रहे हो।”



“हाँ, मैं दूर गाँव का रहने वाला हूँ। श्याम नगर अपनी ससुराल जा रहा हूँ। मुझे कुछ रुपयों की आवश्यकता है, इसलिए मैं यह बकरी बेचना चाहता हूँ।” अजनबी ने जवाब दिया। यह सुनते ही कालू की आँखों में चमक आ गई। उसने तुरंत उस अजनबी को ठगने की योजना बना ली। वह बोला, “अच्छा भैया, इस घोड़े के साथ जो बकरी है, वह कितने की दोगे?”

अजनबी बोला, “पाँच सौ रुपये की।”

“ठीक है, मुझे सौदा मंजूर है, यह लो पाँच सौ रुपये। चलो, अब घोड़े से उतरो, यह घोड़ा भी मेरा हुआ।” ठग ने कहा।



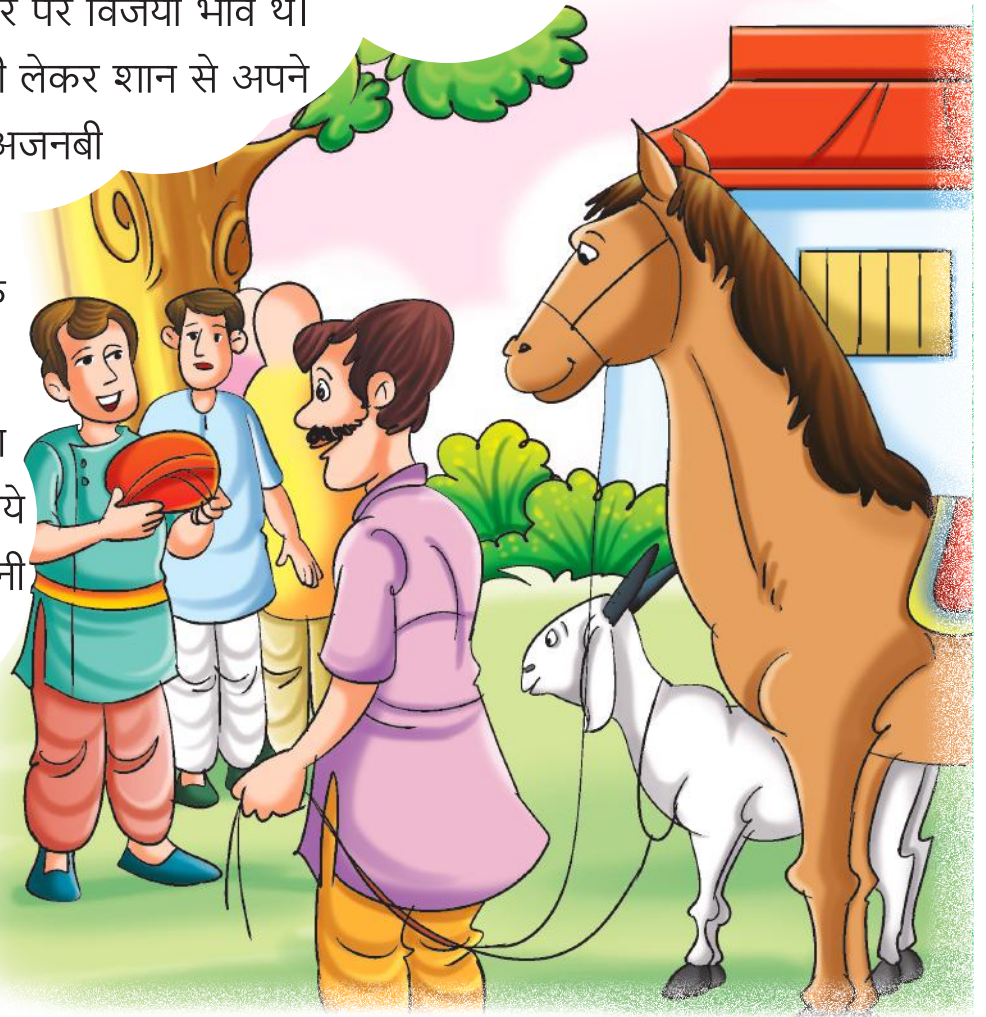
“क्या?” अजनबी चौंकते हुए बोला, “तुमने सिर्फ बकरी ली है, घोड़ा नहीं।”

“अरे, घोड़ा कैसे नहीं दोगे? मैंने तुमसे पहले ही पूछ लिया था कि इस घोड़े के साथ जो बकरी है, वह कितने की दोगे? यानी घोड़े और बकरी दोनों की कीमत पाँच सौ रुपये थी, जो मैंने तुम्हें दे दी है।” कालू बोला। अब तक वहाँ काफी लोग जमा हो चुके थे। उन्होंने भी कालू की

बात पर हामी भरी। कालू के चेहरे पर विजयी भाव थे। वह अजनबी से घोड़ा और बकरी लेकर शान से अपने घर की ओर जाने लगा। तभी अजनबी ने उसे रोका, “सुनो भैया।”

उसकी आवाज़ सुनकर कालू रुक गया और बोला, “क्या बात है?”

“बात दरअसल यह है कि मेरा घोड़ा और बकरी तो तुमने ले लिये है। अब मैं क्या मुँह लेकर अपनी ससुराल जाऊँगा। अतः मैं अपनी यह रेशमी पगड़ी तुम्हें बेचना चाहता हूँ और इस पगड़ी की कीमत मैं सिर्फ एक मुट्ठी चावल लूँगा।”

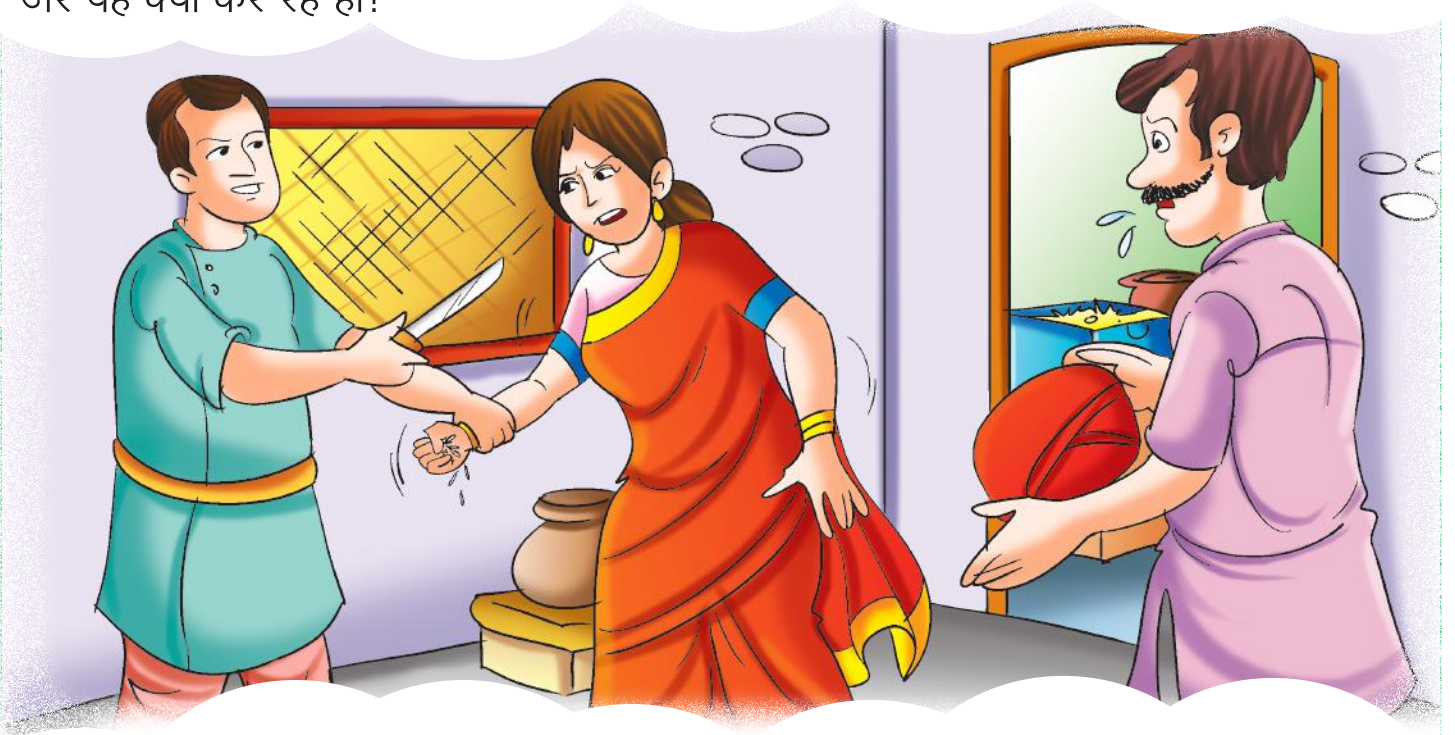




यह सुनकर कालू सोचने लगा, वाह, आज का दिन तो बहुत बढ़िया है। यह तो निरा काठ का उल्लू निकला। अपनी प्रसन्नता को छिपाते हुए कालू सहजता से बोला, “ठीक है। जब तुम इतना निवेदन कर रहे हो, तो मैं ठुकरा नहीं सकता। सामने ही मेरा घर है। मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें एक मुट्ठी चावल दिलवा देता हूँ।”

घर पहुँचते ही कालू ने अपनी पत्नी को आवाज़ लगाई, “सुनती हो भाग्यवान्, ज़रा एक मुट्ठी चावल लाना। इस अजनबी से मैंने उसकी पगड़ी एक मुट्ठी चावल के बदले ख़रीदी है।”

उसकी पत्नी जैसे ही एक मुट्ठी चावल उस अजनबी को देने लगी, उसने तुरंत कालू की पत्नी का हाथ पकड़ लिया और चाकू निकालकर उसकी मुट्ठी काटने के लिए बढ़ने लगा। यह देख कालू चिल्लाया, “अरे यह क्या कर रहे हो?”



“मैं यह मुट्ठी काट रहा हूँ। तुम एक मुट्ठी चावल के बदले पगड़ी का सौदा कर चुके हो।” अजनबी बोला।

यह सुनकर कालू के पैरों तले से ज़मीन खिसक गई। सभी गाँव वाले उस अजनबी की चतुराई देखकर वाह-वाह करने लगे। क्योंकि आज सेर को सवा सेर मिल गया था। कालू गिड़गिड़ाकर उस अजनबी से कहने लगा, “मुझे माफ़ कर दो भैया। मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ। यह लो तुम्हारा घोड़ा और बकरी। यह पाँच सौ रुपये भी तुम ही रखो। किंतु मेरी पत्नी को छोड़ दो।”

“हूँ, ठीक है। अब आई तुम्हारी अक़ल ठिकाने?” यह कहकर अजनबी पुनः अपनी यात्रा पर चल दिया।

शब्द - अर्थ

पगडंडी — राह, रास्ता (way),

योजना — युक्ति (preparation),

काठ का उल्लू — बेवकूफ़ (fool),

निवेदन — प्रार्थना (prayer)।

अजनबी — अनजान (strange),

हामी — मंजूरी (permission),

सहजता — सरलता (easily),

अभ्यास



मौखिक



1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए—

नौजवान

श्याम्

ससुराल

अजनबी

प्रसन्नता

पगडंडी

आवश्यकता

विजयी

निवेदन

2. बताओ, क्या पढ़ा—

(क) कालू कौन था?

(ख) कालू कहाँ रहता था?

(ग) नौजवान के हाथ में क्या था



लिखित



1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए—

(क) कालू से गाँव वाले थे—

खुश

सहमत

परेशान

प्रसन्न

(ख) अजनबी ने बकरी बताई—

दो सौ की

पाँच सौ की

चार सौ की

एक हजार की

(ग) कालू ने अजनबी को समझा—

काठ का उल्लू

कोल्हू का बैल

थोथा चना

कुछ नहीं





2. किसने कहा, किससे कहा?

	किसने कहा	किससे कहा
(क) "लगता है बड़ी दूर से आ रहे हो।"	ने से
(ख) "मैं अपनी यह रेशमी पगड़ी तुम्हें बेचना चाहता हूँ।"	ने से
(ग) "ठीक है, मुझे सौदा मंजूर है।"	ने से
(घ) "अब आई तुम्हारी अक्ल ठिकाने?"	ने से
(ङ) "सुनती हो भाग्यवान्, ज़रा एक मुट्ठी चावल लाना।"	ने से

3. उत्तर लिखो—

- (क) नौजवान कहाँ जा रहा था?
(ख) नौजवान क्या बेचना चाहता था?
(ग) कालू ने नौजवान को कैसे ठगा?
(घ) नौजवान ने अपनी पगड़ी की कीमत क्या बताई?



भाषा-ज्ञान



1. पढ़ो और समझो—

पगडंडी	—	पगडंडियाँ	मुट्ठी	—	मुट्ठियाँ
बकरी	—	बकरियाँ	पत्नी	—	पत्नियाँ
पगड़ी	—	पगड़ियाँ	रस्सी	—	रस्सियाँ

2. वाक्य पढ़कर बताओ, क्या पूछ गया है, क्या बताया गया है—

- (क) इस घोड़े के साथ जो बकरी है, वह कितने की दोगे?

पूछा बताया

- (ख) तुमने सिर्फ़ बकरी ली है।

पूछा बताया

- (ग) यह क्या कर रहे हो?

पूछा बताया

- (घ) मैं दूर गाँव का रहने वाला हूँ।

पूछा बताया

3. जोड़े बनाओ-

घोड़ा	बकरी
बकरा	बहन
पति	घोड़ी
भैया	पत्नी

जो संज्ञा शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं उन्हें पुल्लिंग और जो संज्ञा शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।



क्रियात्मक गतिविधि



- किसकी बोली कौन-सी है, मिलाओ-



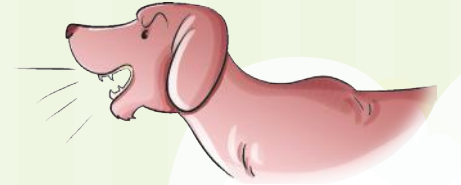
कुहू कुहू



भौं भौं



म्याऊँ-म्याऊँ



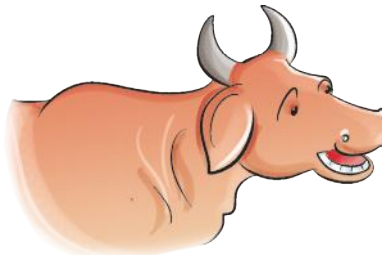
भिन भिन



रंभाना



काँव काँव



दहाड़ना

